अध्याय 22

अ. शास्त्रीय नृत्य शैलियों का ज्ञान
ब. राजस्थानी लोक नृत्य शैलियों का ज्ञान

अ. शास्त्रीय नृत्य शैलियों का ज्ञान

कथकली

भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में 'कथकली' नृत्य अपनी वेशभूषा, विशिष्ट रंगों में श्रृंगार तथा सिर पर आकर्षक सजावट युक्त मुखौटे के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध है।

'कथा' अर्थात् कहानी एवं 'कली' से तात्पर्य है कलात्मक प्रस्तुति। एतिहासिक अध्ययनों व विभिन्न शोध कार्यों द्वारा कथकली का संबंध प्राचीन लोक नृत्य शैलियां – कुटीयट्टम, कृष्णाट्टम एवं रामनाट्टम शैलियों से हैं। मूक अभिनय के कारण कथकली एक प्रकार का व्याख्यात्मक संगीत नाट्य है। कथकली के जीर्णोद्धार का श्रेय इस सदी के महाकवि वल्लथोलको है। 17 वीं सदी में प्रसिद्ध नर्तक केरल वर्मा ने कथकली के वर्तमान स्वरूप को जन्म दिया। त्रावणकोर राजपरिवार के द्वारा भी कथकली को प्रोत्साहन व प्राश्रय दिया गया।

कथकली में संगीत, कथा व अभिनय का समन्वय होता है। गायन वादन पार्श्व/नेपथ्य से होता है। नृत्य की शिक्षा केलिए बाल्यकाल में ही कलारी (एक प्रकार का अखाड़ा) भेजा जाता हैं। जहाँ विशेष व्यायाम व मालिश से शरीर में लोच विकसित होता है। तत्पश्चात लगभग 6 वर्षों तक नम्बूद्री पंडितों द्वारा नृत्य शिक्षा दी जाती है। कथकली की मुद्राएँ– नाट्यशास्त्र तथा हस्त लक्षण दीपिका नामक प्राचीन ग्रंथों से ग्राह्म है। हाव–भाव, लयबद्ध अंग संचालन युक्त अभिनय व नृत्य के अंतर्गत कुशल नर्तक चेहरे द्वारा ही क्रोध, साहस, प्रेम, दया, भय आदि भावों को सफलता पूर्वक व्यक्त करता है। इसमें स्त्री पात्रों की भूमिका भी पुरूष ही निभाते हैं। नृत्य व अभिनय द्वारा काव्यप्रदर्शन ही कथकली है। मालाबार क्षेत्र के प्रत्येक बड़े मंदिर का अपना कथकली मंडल होता है।

वेशभूषा–कथकली में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चेहरे की सज्जा है जिसमें लगभग 3–4 घंटे का समय लगता है। सात प्रकारों से मुख सज्जा की जाती है– पाक्का, पायुप्पु, कट्टी, कारी, ताटी, मिनुक्कु, एवं तेप्पु। पात्र की भूमिका के आधार पर इनमें रंग व सज्जा का भेद है। जैसे– पाक्का या पाच्चा (हरे रंग व लाल होठ)– कृष्ण, राम,

विष्णु, शिव, सूर्य, नल, अर्जुन ।

ताटी (लाल रंग)– रावण, दुशासन, हिरण्याकश्यप, मिनुक्कु (चमकीला पीला, नारंगी)– सीता, मोहिनी, पांचाली आदि। अर्थात् राजसिक, तामसिक व सात्विक पात्रों के अनुसार रंग–चयन तथा वेशभूषा में बदलाव आता है, पोशाक में अनेकों गांठें लगानी पड़ती है। सिर पर बड़ा व भव्य मुकुट पूरी बांह का अंगरखा, गले में लंबा दुपट्टा, आभूषणों में चूड़ियां, पायल, हार बाजूबंद आदि वेशभूषा, पात्र की भूमिका के अनुसार निर्धारित होते है।

नृत्य के चरण– केलिकोट्ट, सेवाकलि व मंजूथरा, नृत्य आरंभ होने से पहले के चरण है। टोटायम (पर्दे के पीछे का नृत्य) एवं पुरूपट्टू (कतारबद्ध होकर नृत्यारंभ) से नृत्य का मुख्य कथानक शुरू होता है। थिरोनत्तम, कालब, इरट्टी आदि नृत्य के विभिन्न चरण है।

मद्दमलम, चेंडा, इडक्का (ढ़ोल नुमा वाद्य), मंजीरा, झांझ आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। कथकली नृत्य की दो महत्त्वपूर्ण शैलियां हैं– किडंगूर शैली–त्रावणकोर, कुल्लुवयी शैली– पलक्कड स्थानों से संबंधित हैं। श्री नारायण मेनन, कृष्ण नायर, रमन पिल्लई, गोपीनाथ, शंकरन नम्बूद्री, राघवन नायर, कृष्णनकुट्टी, कुंजुकुरूप आदि प्रमुख कथकली कलाकार है।

कुचिपुड़ी

तैलचित्र–सितेन्द्र योगी

भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों में से एक कुचिपुड़ी नृत्य मूलतः आंध्रप्रदेश के कृष्णा जिले के कुचिपुड़ी नामक गांव से संबंधित है। यह परंपरागत रूप से नृत्य नाट्य है। कुंचेलापुरम (कुचिपूरी) अन्य शास्त्रीय नृत्यों के समान ही इस नृत्य की गहराई में संस्कृत साहित्य, धार्मिक कथानक, मंदिर व नाट्यशास्त्र आदि का आधार दिखाई देता है। इस शैली को वर्तमान स्वरूप में स्थापित कर रंगमंच पर लाने में एक सन्यासी तीर्थ नारायण यती एवं उनके शिष्य सितेन्द्र योगी (17 वीं सदीं) का योगदान है। वैष्णव परंपरा में कृष्ण आधारित शैली के रूप में, तमिलनाडु की लोक शैली भागवत मेला से इसका गहन संबंध है। कुचिपुड़ी नृत्य एकल, युगल व सामूहिक रूपों में प्रस्तुत किया जाता है। कर्नाटक शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत व वाद्य द्वारा नृत्य संगति होती है। 1920 से 1950 के दौरान शास्त्रीय हिन्दु नृत्य के रूप में वेदांतम् लक्ष्मीनारायण शास्त्री, वेम्पत्ति वेंकटनारायण शास्त्री तथा चिंता वेंकटरमैया ने इस शैली को पुनः नवजीवन प्रदान किय। अमेरिकी नृत्यांगना ईथर शेरमेन (रागिनी देवी), उनकी पुत्री इन्द्राणी रहमान, यामिनी कृष्णमूर्ति, स्वप्न सुंदरी, राजा–राधा रेड्डी आदि इस शैली के प्रख्यात कलाकार व गुरू है।

गुरूराजा–राधा रेड्डी

महिला नृत्यांगनाएँ जरीदार रंगीन साड़ी या सिलाई की गई ड्रेस पहनती है। इसमें भरतनाट्यम की तरह आगे पंखा नहीं होता अपितु पल्लु की प्लेंटे बनाकर उन्हें विशेष तरीके से लगाया जाता है। केशविन्यास भी भरतनाट्यम से भिन्न होता है। सिर पर चंद्रमा व सूर्य के प्रतीक आभूषण लगाए जाते हैं। त्रिभुवन(तीन लोक) नुमा केश सज्जा भी की जाती है। कृष्ण आदि पात्रों में नाटकीय वेशभूषा भी प्रयुक्त की जाती है।

कुचिपुड़ी नृत्य की संगति में नटुवरन (मुख्य संगीतज्ञ) मंजीरे पर ताल देता है। मृदंग, वायलिन, बांसुरी, वीणा, घट्य आदि दक्षिणी वाद्यों का प्रयोग होता है। दशावतार, नारायण तीर्थ, रूक्मिणी विवाह, प्रहलाद चारित्रम, आदि कथानक नृत्य के विषय हैं।

नृत्य प्रशिक्षण में शारीरिक व्यायाम, योग शास्त्रीय अध्ययन, अभ्यास व प्रस्तुति प्रमुख चरण हैं। नृत्य प्रस्तुति में शब्दम्, वर्णम्, पदम्, तिल्लाना आदि गीत शैलियों का प्रयोग किया जाता है। थाली नृत्य में थाली की किनार पर खड़े होकर विविध लयकारियों का प्रदर्शन किया जाता है।

मोहिनीअट्टम

'मोहिनी'अर्थात् भगवान विष्णु का अवतार एवं 'अट्टम' अर्थात् नृत्य।

मोहिनीअट्टम की शाब्दिक व्याख्या ''मोहिनी'' के नृत्य के रूप में की जाती है, हिन्दू पौराणिक गाथा की दिव्य मोहिनी, केरल का शास्त्रीय एकल नृत्य–रूप है ।पौराणिक गाथा के अनुसार भगवान विष्णु ने समुद्र मन्थन के सम्बंध में और भस्मासुर के वध की घटना के सम्बंध में लोगों का मनोरंजन करने के लिए ''मोहिनी'' का वेष धारण किया था ।यह केवल स्त्रियों द्वारा निष्पादित किया जाता है । मोहिनीअट्टम' की विशेषता, बिना किसी अचानक झटके अथवा उछाल के लालित्यपूर्ण, ढलावदार शारीरिक अभिनय है ।यह, 'लस्प' शैली से संबंधित है जो स्त्रीत्वपूर्ण, मुलायम और सुन्दर है । अभिनय में सर्पण द्वारा बल दिया जाता है, तथा पंजो पर ऊपर और नीचे अभिनय होता है, जो समुद्र की लहरें तथा कोकोनट पाम वृक्षों अथवा खेत में धान पौधों के ढलान से मिलता–जुलता है

भगवान विष्णु के मोहिनी अवतार से एतिहासिक संबंध दर्शाने वाली इस नृत्य शैली में भरतनाट्यम व कथकली के तत्व समाहित हैं तथा केरल प्रदेश से इसका उद्गम है। अन्य शास्त्रीय नृत्यों की तरह ही 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ से इसके मूल सिद्धांत लिए गए है। इस नृत्य में लास्य अंग की प्रधानता है। मोहिनीअट्टम नाम का उल्लेख 16 वीं सदी के ग्रंथ 'व्यवहार माला', 'घोषयात्रा' में भी मिलता है। लेकिन इसके वर्तमान स्वरूप हेतु त्रावणकोर के राजा स्वाति तिरूनाल' के प्रयास ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। राजा स्वाति तिरूनाल ने देवदासी नृत्य के तत्व, कथकली के तत्व व नंग्यार शैली के मुखाभिनय के तत्वों को समाहित कर शैली का विशेषीकरण किया तथा प्रस्तुति हेतु अनेक पदम, वर्णम आदि की रचना की।

मोहिनीअट्टम को 4 प्रमुख भागों में बांटा जाता है – नगनम्, जगनम्, धगनम, सम्मिश्रम्। पदाघात अत्यंत कोमल व लय–ताल आश्रित होते हैं। 'अतिभंग' इस नृत्य की मुख्य मुद्रा है। इनमें चोलकेटु(ईश्वर आराधना) जतिस्वरम्, वर्णम, पदम् तिल्लाना, श्लोकम प्रमुख हैं।

जरी की स्वर्णिम किनारी युक्त सफेद, क्रीम साड़ी। कमर, हाथ, गले, कान व सिर पर स्वर्णिम आभा युक्त आभूषण सिर के बांयी ओर जूड़ा बनाकर फूलों से सजाया जाता है। पैरों में घुंघरू, आल्ता (लाल रंग से सजावट) का प्रयोग होता है।नृत्य संगति में कर्नाटक शास्त्रीय संगीत व वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। मृदंगम (मद्दलम), इडक्का, बांसुरी, वीणा, कुझितालम्, आदि वाद्य प्रयोग में लिए जाते हैं। मोहिनीअट्टम के प्रख्यात नृत्याचार्यों में वल्लथोल नारायणमेनन, गोपीनाथ, मुकुंदराजा, कृष्ण पाणिक्कर, कल्याणीकुट्टीअम्मा, राघवन नायर, कनक रेले, कुंजन पणिक्कर आदि।

सत्रिया

पूर्वोत्तर 'आसाम' के वैष्णव मठों व मंदिरों से प्रचलित शास्त्रीय नृत्य नाट्य शैली 'सत्रिया' है। इसमें केन्द्रीय विषय कृष्ण व राधा है। सन् 2000 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा इसे आधिकारिक पहचान प्रदान की। आसाम में मंदिर व मठों को 'सत्रा' कहते हैं इनमें नृत्य के विशेष स्थान 'नामघर' कहलाते हैं। सत्रिया नृत्य शैली को स्थापित करने में 15 वीं सदी के वैष्णवसंत श्रीमंत शंकर देव का नाम प्रमुख है, नृत्य के मूलभूत तत्व नाट्यशास्त्र अभिनय दर्पण व संगीत रत्नाकर पर ही आधारित है। प्रारंभ में यह नृत्य केवल पुरूष साधकों द्वारा ही प्रस्तुत किया जाता था, वर्तमान में महिला व पुरूषों की समान सहभागिता दिखाई देती है।

यह असमी नृत्य और नाटक का नया खजाना, शताब्दियों तक सत्रों द्वारा एक बड़ी प्रतिज्ञा के साथ विकसित और संरक्षित किया गया है। इस नृत्य शैली को अपने धार्मिक विचार और सत्रों के साथ जुड़ाव के

कारण उपयुक्त ढंग से सत्रिया नाम दिया गया। शंकरदेव ने विभिन्न स्थानीय शोध प्रबन्धों, स्थानीय लोक नृत्यों जैसे विभिन्न घटकों को शामिल करते हुए इस नृत्य शैली की रचना की। नव वैष्णव आंदोलन से पहले असम में दो नृत्य शैलियां थीं– ओजा पल्लि और देवदासी। ओजा पल्लि नृत्यों के दो प्रकार अब तक असम में हैं दृसुकनानी, जिसमें ओजा पल्लि नृत्य सर्प देवी की पूजा के अवसर पर समूह गायन की संगति करते हैं। शक्ति सम्प्रदाय (पंथ) का सुकनानी ओजा पल्लि है। मनसा और व्याहार गीत, रामायण, महाभारत और कुछ पुराणों के असमी रूपांतर से ग्रहण किए गए हैं। और व्याहार गीत वैष्णव सम्प्रदाय का है। श्रीमंत शंकरदेव ने सत्र में अपने दैनिक धार्मिक अनुष्ठानों में व्याहार गीतों को जोड़ा। अब तक भी व्याहार गीत असम के सत्रों के धार्मिक अनुष्ठानों का एक भाग हैं।

सत्रिया में नृत्त, नृत्य, नाट्य का सुंदर सम्मिश्रण है, यह नृत्य अंकिया नाट भाओना व मणिपुरी शैली से साम्य है, तथा 'नामघरों में सन्यासियों द्वारा उपनिषद, भागवत पुराण के कथानको के आधार पर किया जाता था श्री मत शंकर देव एवं उनके शिष्य माधवदेव द्वारा सत्रिया नृत्य की शैलीगत विशेषताओं, प्रस्तुति व रचनाओं पर सूक्ष्म कार्य किया गया, वर्तमान सदी में इसे वैश्विक पहचान देने में संगीत नाटक अकादमी व डा. भूपेन हजारिका के प्रयास अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहे हैं। नृत्य प्रस्तुति में पौरूषिक भंगी (तांडव) व स्त्री भंगी (लास्य) का मिश्रण है। पारंपरिक रूप से आज भी दैनिक आराधन के तौर पर पुरूष सन्यासियों (भोकोट) द्वारा 'सत्रा' में किए जाते हैं।

पुरूष वेशभूषा में धोती, चादर, पागुरी (पगड़ी) तथा महिला परिधान में – गुरी, चादर तथा कांची होते हैं। ये वस्त्र सफेद आसामी पाट सिल्क पर लाल, नीली, पीली, हरे रंग की डिजाइनों में बुनावट किए होते हैं।कृष्ण व नादुभंगी नृत्य पीले, सूत्रधर नृत्य में सफेद आदि विशेष परिधान प्रचलित हैं। आभूषणों में ललाट पर 'कोपाली', 'मुथीखारू' गामखारू (हाथ कड़े), मातामोनी (गले हेतु) तुका सुना (कर्ण हेतु) सत्रिया नृत्य की प्रस्तुति में रागों पर आधारित 'बोर गीत' नामक रचनाएँ प्रयुक्त होती है। वाद्यों में – खोल, मंजीरा, पाटीताल, खंटीताल, बांसुरी काली (शहनाई के समान) मंच पर वायलिन हारमोनियम आदि भी प्रयुक्त होते हैं।

पाद (पैर) संचालन की स्थिति को तीन भागों– पुरूष ओरा, प्रकृति ओरा एवं सम में बांटा जाता है। हस्त मुद्राएँ प्रायः नाट्यशास्त्र, अभिनयदर्पण व हस्तमुक्तावली ग्रंथ पर आधारित हैं। अंकिया नाट में पात्रों की स्थिति के अनुरूप 'मास्क' (मुखौटे) का प्रयोग भी होता है।सूत्रधारी नाच, प्रवेशर नाच, रासार नाच, युद्धार नाच, झुमुरा नाच, नादु भंगी, चाली नाच

सत्रिया नृत्य के प्रमुख गुरूओं में – मनीराम दत्त मुक्तियार, गहन चंद्र गोस्वामी, जतिन गोस्वामी, घनाकांत बोरा, तनकेश्वर हजारिका, रामकृष्ण तालुकदार आदि है।

महिला कलाकारों में – गोरिया हजारिका, अनिता शर्मा, मेनका बोरा, अपराजिता दावका आदि है।

ब. राजस्थानी लोक नृत्य शैलियों का ज्ञान

कच्छी घोड़ी नृत्य

कच्छी घोड़ी, कच्ची घोड़ी, काछी घोरी कच्छ की घोड़ी नाम से जाना जाने वाला नृत्य मूलतः राजस्थान के शेखावटी अंचल से है लेकिन राजस्थान के प्रत्येक भाग के अलावा अन्य प्रदेशों में भी किया जाता है। महाराष्ट्र और गुजरात में तो इसी नाम से जाना जाता है, तमिलनाडु में 'पोइक्कल कुथीराईअट्टम', उड़ीसा में 'चैतोघोड़ा' नाम से घोड़े बहुत अंतर के साथ प्रचलित है। सरगरा, भांभी, भावी, कुम्हार आदि जातियों द्वारा प्राश्रित यह नृत्य विशेष राजकीय अवसरों पर तो सभी वर्ग के कलाकारों को करते देखा जाता है।

इस नृत्य की उत्पत्ति के संदर्भ में अनेक कथानक प्रचलित हैं जिनमें – मुगल–मराठा युद्ध, राणा प्रताप व चेतक, लोक देवता रामदेव पीर, तथा गरीबों के हितेषी लुटेरों आदि प्रसिद्ध है।

नृत्य प्रस्तुति में गायक, वादक व नृत्यकार सम्मिलित प्रस्तुति देते हैं, शादी–विवाह, स्वागत समारोह, सामाजिक उत्सवों तथा राजकीय आयोजनों में नृत्य दिखाई देता है। नृत्यकार कुरता व साफा व घुंघरू पहनता है। बांस, टोकरी व कपडे से घोड़ी, जिसमें सुंदर व आकर्षक काँच कढ़ाई तथा सजावट कार्य किया जाता है। नृत्यकार इसमें कमर तक प्रवेश करके हाथ में तलवार घुमाते हुए नकली युद्ध का प्रदर्शन करता है। घोड़ी का सिर तथा रोंएदार गुच्छेवाली पूंछ हिलते–डुलते वास्तविक घोड़ी का आभास कराते हुए दर्शकों को रोमांचित करती है। नृत्य के दौरान ताशा व ढ़ोल वाद्य वातावरण में उत्तेजना व युद्ध का वातावरण उपस्थित करते हैं। लसकरिया बींद, रसाला, रंगभरिया, भंवरिया, टोडरमल आदि गीत विशेष प्रचलित है।

लोक कलाकारों की आजीविका तथा लोक नृत्यों के प्रचलित पंरपराओं में कच्छीघोड़ी नृत्य का विशेष महत्त्व है।

नृत्यांगना गुलाबो

कालबेलिया नृत्य

विश्व स्तर पर राजस्थान के प्रचलित नृत्यों में कालबेलिया नृत्य की उत्कृष्ट पहचान है। कालबेलिया जनजाति जो अधिकतर पाली, भीलवाड़ा, सिरोही, चित्तौड़, अजमेर व उदयपुर जिलों में स्थित है, मूल रूप से सांप पकड़ने, पालने, विष निकालने, उपचार करने, नृत्य व संगीत आदि कार्य करते हैं। ये सपेरा, जोगी, जोगीड़ा नाम से

भी जाने जाते हैं तथा जलंधर नाथ के शिष्य 'करणीपाव' से अपना संबंध मानते हैं।

कालबेलिया समुदाय हिन्दु धर्म को मानते हैं एवं घुमक्कड़ जीवन व्यतीत करते हैं।

कालबेलिया नृत्य के संगीत में पूंगी, इकतारा, डफली, चंग, धुरालियों, खंजरी आदि प्रमुख वाद्य हैं। स्त्रियाँ ही अधिकतर नृत्य करती हैं। कभी–कभी पुरूष भी साथ नृत्य करते हैं। नृत्य की गति तीव्र कमर का विशेष तौर पर मटकना, नृत्य में करतब प्रदर्शन, कंठ व वाद्यों का सुरीलापन व काले वस्त्रों पर आकर्षक सजावट युक्त परिधान तथा आभूषण इस नृत्य को वैश्विक पहचान देने में महत्त्वपूर्ण कारक है। राजस्थान के अधिकांश लोक नृत्यों में घूमर नृत्य की झलक दिखाई देती है। इसके विपरीत कालबेलिया नृत्य में हाथ, पैर व कमर का अपना स्वतंत्र संचालन व नृत्य भंगिमाएँ हैं।

कालबेलिया नृत्य मंडली

कालबेलिया स्त्रियाँ डफली, छोटी चंग बजाकर बस्ती, मोहल्ले में नाचती गाती है तथा पैसा आटा आदि मांग कर लाती है। होली व अन्य त्यौहारों पर प्रायः ऐसा देखा जाता है। व्यावसायिक तौर पर इनके नृत्य की आजकल सर्वत्र खूब मांग रहती है। इस कारण इनके जीवन स्तर में बहुत बदलाव देखे गए हैं। प्रख्यात नृत्यांगना गुलाबों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस नृत्य को स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके गीतों की गमक व खटके तथा नृत्य में जोश व मस्ती के साथ द्रुत लय में नृत्य प्रस्तुति विदेशी पर्यटकों को भी आकर्षित करते हैं।

गैर नृत्य

'घेर' 'गैर', 'गैहर' राजस्थान के होली नृत्यों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण 'नृत्य' नाम हैं। गोल घेरे में इस नृत्य की संरचना होने के कारण इसका नाम 'गैर' या 'घेर' प्रचार में आया है। इस नृत्य में पुरूष लकड़ी की डांडिया लेकर गोल घेरे में नृत्य करते हैं। वृत्ताकार आकृति में यह नृत्य केवल पुरूषों द्वारा किया जाता है। नाचते–नाचते एक दूसरे से आगे पीछे डंडियों से टकराव, पैरों की विशेष गति व नगाड़े की ताल का साम्य वातावरण में ओज, आनंद की सृष्टि करता है।

होली के त्यौहार का माहौलगैर नृत्य व चंग की गूंज से शुरू होता है। नृत्य के दौरान ऊँची 'पटान' स्थान बनाया जाता है जहां नगाड़ा,ढ़ोल, शहनाई, चंग वादक बैठते हैं तथा सभी जाति वर्ग के लोग गोल घेरे में नृत्य करते हैं। नृत्य के साथ गीत भी गाए जाते हैं। नर्तक विविध एतिहासिक वेशभूषाओं में भी नृत्य करते हैं, पैरों में घुंघरू पहनते हैं।

राजस्थान में मेवाड़ (नाथद्वारा, शाहपुरा, भीलवाड़ा, मांडल) तथा मालानी (बाड़मेर, पारलू, सनावड़ा मांगला) की गैर अत्यंत प्रसिद्ध है। दोनों ही प्रकारों में नृत्य की चाल का फर्क है।

इनमें ताल कहरवे की ही एक विशेष चाल –

धिंऽऽधिं नाऽ धिंऽ धिंधिं ऽधिं नाऽ ऽऽ

मंद के मध्य लय की ओर झूमते हुए बढ़ती है तथा नर्तक को मदमस्त कर देती है। मेवाड़ की गैर में सफेद अंगरखी, सफेद धोती, व लाल पगड़ी पहनते हैं। मालानी की गैर में सफेद 'ऑंगी' जो फ्राक की तरह लंबी होती है, इस पर तलवार का पट्टा, गोल साफा (पगड़ी) पहनते हैं। गैर नृत्य राजस्थान का ओजपूर्ण व विशिष्ट नृत्य है। राजस्थान की रजवाड़ी शान का महिला प्रधान नृत्य यदि घूमर है तो पुरूष प्रधान नृत्य निश्चित तौर पर 'गैर' नृत्य को ही कहा जा सकता है। जिसमें हम राजस्थान की रौबीली शान व परंपरा का अनुभव

कर सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु –

- कथकली में – चित्रकला, मूर्तिकला, नाट्य व संगीत कला का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।पारंपरिक तौर पर कथकली प्रशिक्षण में 'कलारी' (एक प्रकार का अखाड़ा) तथा नम्बूद्री पंडितों का स्थान महत्त्वपूर्ण है।कथकली का मूल रामनाट्यम तथा कृष्णाट्टम लोक शैलियों में मिलता हैकथकली के जीर्णोद्धार व शैलीगत विकास में केरल वर्मा तथा महाकवि वल्लथोल का स्थान महत्त्वपूर्ण है।
- कुचिपुड़ी नृत्य का वर्तमान स्वरूप श्री सितेन्द्र योगी के प्रयासों की देन है। थाली की किनार पर नृत्य, कुचिपुड़ी नृत्य का एक अंग है।
- केरल प्रदेश से दो शास्त्रीय नृत्य की शैलियां विकसित हुई है – कथकली एवं मोहिनीअट्टम।
- त्रावणकोर के राजा स्वाति तिरूनाल ने मोहिनीअट्टम के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- आसाम के वैष्णव मंदिरों में सत्रिया नृत्य की परंपरा रही है।सन् 2000 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा आधिकारिक तौर पर इसे शास्त्रीय नृत्य का दर्जा दिया गया है।
- अन्य राज्यों में भी कच्छी घोड़ी नृत्य के समान ही नृत्य देखने को मिलते हैं। इसमें नकली घोड़ी पर सवार नर्तक हाथ में तलवार लहराता युद्ध का नृत्यमय प्रदर्शन करता है।
- पूंगी, डफली, खंजरी, घुरालियों आदि वाद्य कालबेलिया नृत्य में प्रयुक्त होते हैं।कालबेलिया नृत्य में गायन, वादन, नृत्य तथा वेशभूषा अत्यंत प्रभावी अंग है।गुलाबों नृत्यांगना ने कालबेलिया नृत्य को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दी है।
- होली के दिनों में 'गैर या घेर' नृत्य पुरुषों का एक प्रमुख व प्रभावी नृत्य हैं। गोल घेरे में विशेष परिधान पहने पुरूष छड़ीनुमा डंडियों को टकराकर नृत्य करते है। गैर नृत्य में कहरवा ताल की एक विशेष चाल दर्शकों व नर्तक को झूमने पर मजबूर कर देती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. 'कच्छी घोड़ी' शब्द से तात्पर्य जाना जाता है –
   अ. अकबर की घोड़ी ब. कच्छ प्रदेश की घोड़ी
   स. सपेरों की घोड़ी द. कच्छावा घोड़ी
2. कच्छी घोड़ी नृत्य के समान ही, तमिलनाडु में प्रचलित नृत्य है –
   अ. चैतो घोड़ा ब. मोहिनीअट्टम स. पोइक्कल कुथीराई अट्टम द. कृष्णाट्टम
3. पूंगी, डफली आदि वाद्यों का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है –
   अ. कालबेलिया ब. तेराताली स. घूमर द. कच्छी घोड़ी
4. कालबेलिया नृत्य की प्रसिद्ध नृत्यांगना है –
   अ. अल्लाजिलाई बाई ब. तीजन बाई स. फलकूबाई द. गुलाबों
5. केवल पुरूषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है –
   अ. मोहिनीअट्टम ब. कुचिपुड़ी स. गैर नृत्य द. कालबेलिया
6. 'सफेद औंगी' (फ्राकनुमा वस्त्र) पहनकर 'गैर' किया जाता है –
   अ. बाड़मेर ब. उदयपुर स. नाथद्वारा द. शाहपुरा
7. 'अंकिया नाट' किस नृत्य से संबंधित है ?

(अ) कथकली (ब) कुचिपुड़ी (स) सत्रिया (द) मोहिनीअट्टम

8. कुचिपुड़ी नृत्य किस लोक शैली से प्रभावित है ?

(अ) कुटीयट्टम (ब) भागवत मेला (स) अंकियानाट (द) देवदासी नृत्य

9. खोल नामक वाद्य किस नृत्य शैली का प्रमुख वाद्य है ?

(अ) सत्रिया (ब) कथकली (स) मोहिनीअट्टम (द) कुचिपुड़ी

उत्तरमाला– (1) ब (2) स (3) अ (4) द (5) स (6) अ (7) स (8) अ (9) अ

1. संबंध मिलाइये

1. कथकली	–	अ. आंध्रप्रदेश
2. कुचिपुड़ी	–	ब. केरल
3. मोहिनीअट्टम	–	स. आसाम
4. सत्रिया	–	द. केरल

उत्तर– 1. ब 2. अ 3. द 4. स

2. संबंध मिलाइये

1. केरल वर्मा	–	अ. सत्रिया
2. सितेन्द्र योगी	–	ब. कथकली
3. स्वाति तिरूनाल	–	स. कुचिपुड़ी
4. श्री मत शंकर देव	–	द. मोहिनीअट्टम

उत्तर– 1. ब 2. स 3. द 4. अ

लघुउत्तर प्रश्न –

1. कच्छी घोड़ी नृत्य में नृत्यकार व घोड़ी की वेशभूषा का उल्लेख कीजिए।
2. कालबेलिया नृत्य की विशेषताओं को समझाइये।
3. गैर नृत्य की प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।
4. कच्छी घोड़ी, कालबेलिया व गैर नृत्य में प्रयुक्त किए जाने वाले वाद्यों के नाम लिखिए।
5 कालबेलिया जनजाति का सामान्य परिचय लिखिए।
6 कालबेलिया व गैर नृत्य में तुलनात्मक अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. पाठ्यक्रम में वर्णित चारों नृत्यों के मूलप्रदेश, संबंधित लोक नृत्य शैली, प्रमुख कलाकारों का उल्लेख कीजिए।
8. उपरोक्त चारों नृत्यों में प्रयुक्त किए जाने वाले वाद्यों का उल्लेख कीजिए।

निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठ्यक्रम में वर्णित नृत्यों की वेशभूषा का उल्लेख कीजिए।

अभ्यास बिन्दु

1. पाठ्यक्रम के नृत्यों के वीडियों यू ट्यूब अथवा सी.डी आदि अन्य माध्यमों से देखकर अध्ययन करें।
2. शास्त्रीय नृत्य व लोक नृत्यों में अंतर को समझें।
3. शास्त्रीय नृत्यों का नाट्यशास्त्र से क्या संबंध है ? इस विषय की एतिहासिकता को अध्यापक की सहायता से समझें।
4. पाठ्यक्रम में निर्धारित तीनों लोक नृत्यों के कार्यक्रम अथवा रिकार्डिंग का अध्ययन कर – वेशभूषा, अंग संचालन, वाद्य, संगीत, तथा प्रस्तुति की समीक्षा करें।